

## ॥ गोस्वामी तुलसीदास कृत दोहावली ॥

॥ राम ॥

॥ श्री हनुमते नमः ॥

दो०

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥  
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार ।  
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥  
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥  
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥  
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥  
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥  
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥  
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥  
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥  
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥  
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥  
लाय संजीवन लखन जियाये । श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥  
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥  
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥  
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥  
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥  
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥  
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥  
जुग सहस्रत्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥  
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥  
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥  
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥  
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहु को डरना ॥  
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनो लोक हाँक ते काँपै ॥  
भूत पिसाच निकट नहि आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥  
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥  
संकट ते हनुमान छुडावैं । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥  
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥  
चारो जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥  
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥  
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥  
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥  
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥  
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥  
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥  
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥  
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥  
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महासुख होई ॥  
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥  
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दो०

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।  
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति ॥

सियावर रामचन्द्र की जय । पवनसुत हनुमान की जय ॥  
उमापति महादेव की जय । बोलो भाइ सब संतन्ह की जय ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

दोहावली

ध्यान

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर ।  
ध्यान सकल कल्याणमय सुरतरु तुलसी तोर ॥  
सीता लखन समेत प्रभु सोहत तुलसीदास ।  
हरषत सुर बरषत सुमन सगुन सुमंगल बास ॥  
पंचबटी बट बिटप तर सीता लखन समेत ।  
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत ॥

राम-नाम-जपकी महिमा

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लखन समेत ।

राम नाम जप जापकहि तुलसी अभिमत देत ॥  
 पय अहार फल खाइ जपु राम नाम षट मास ।  
 सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ॥  
 राम नाम मनीदीप धरु जीह देहरी द्वार ।  
 तुलसी भीतर बाहरेहुँ जौ चाहसि उजियार ॥  
 हियँ निर्गुन नयनन्हि सगुन रसना राम सुनाम ।  
 मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ॥  
 सगुन ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुन मन ते दूरि ।  
 तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवन मूरि ॥  
 एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।  
 तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥  
 नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून ।  
 अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून ॥  
 नामु राम को कलपतरु कलि कल्याण निवासु ।  
 जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥  
 राम नाम जपि जीहँ जन भए सुकृत सुखसालि ।  
 तुलसी इहाँ जो आलसी गयो आजु की कालि ॥  
 नाम गरीबनिवाज को राज देत जन जानि ।  
 तुलसी मन परिहरत नहिं घुर बिनिआ की बानि ॥  
 कासीं बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग ।  
 तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग ॥  
 मीठो अरु कठवति भरो रौताई अरु छैम ।  
 स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम ॥  
 राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भए कुजाति ।  
 कुतरुक सुरपुर राजमग लहत भुवन बिख्याति ॥  
 स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम परमारथ न प्रबेस ।  
 राम नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेस ॥  
 मोर मोर सब कहँ कहसि तू को कहु निज नाम ।  
 कै चुप साधहि सुनि समुझि कै तुलसी जपु राम ॥  
 हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच ।  
 तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जप नीच ॥  
 राम नाम अवलंब विनु परमारथ की आस ।  
 बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास ॥  
 तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुनि हित करि मानि ।  
 लाभ राम सुमिरन बड़ो बड़ी बिसारें हानि ॥  
 बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबहीं आजु ।  
 होहि राम को नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु ॥

प्रीति प्रतीति सुरीति सों राम राम जपु राम ।  
 तुलसी तेरो है भलो आदि मध्य परिनाम ॥  
 दंपति रस रसना दसन परिजन बदन सुगेह ।  
 तुलसी हर हित बरन सिसु संपति सहज सनेह ॥  
 बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।  
 रामनाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥  
 राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकाल ।  
 जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु ।  
 सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकर रेनु ॥  
 राम नाम कलि कामतरु सकल सुमंगल कंद ।  
 सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद ॥  
 जथा भूमि सब बीजमय नखत निवास अकास ।  
 राम नाम सब धरममय जानत तुलसीदास ॥  
 सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।  
 नाम सुप्रेम पियूष हृद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि ।  
 राम चरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥  
 सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।  
 नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥  
 राम नाम पर नाम तें प्रीति प्रतीति भरोस ।  
 सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस ॥  
 लंक बिभीषन राज कपि पति मारुति खग मीच ।  
 लही राम सों नाम रति चाहत तुलसी नीच ॥  
 हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल कल्याण ।  
 रामनाम नित कहत हर गावत बेद पुरान ॥

तुलसी प्रीति प्रतीति सों राम नाम जप जाग ।  
 किएँ होइ बिधि दाहिनो देइ अभागोहि भाग ॥  
 जल थल नभ गति अमित अति अग जग जीव अनेक ।  
 तुलसी तो से दीन कहँ राम नाम गति एक ॥  
 राम भरोसो राम बल राम नाम बिस्वास ।  
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल माँगत तुलसीदास ॥  
 राम नाम रति राम गति राम नाम बिस्वास ।  
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास ॥

रामप्रेमके बिना सब व्यर्थ है

रसना साँपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ।  
 तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता वाम ॥  
 हिय फाटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सो तन केहि काम ।  
 द्रवहिं स्त्रवहिं पुलकइ नहीँ तुलसी सुमिरत राम ॥  
 रामहि सुमिरत रन भिरत देत परत गुरु पाँय ।  
 तुलसी जिन्हहि न पुलक तनु ते जग जीवत जायँ ॥

सोरठा

हृदय सो कुलिस समान जो न द्रवइ हरिगुन सुनत ।  
 कर न राम गुन गान जीह सो दादुर जीह सम ॥  
 स्त्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर जस ।  
 ते नयना जनि देहु राम करहु बरु आँधरो ॥  
 रहैं न जल भरि पूरि राम सुजस सुनि रावरो ।  
 तिन आँखिन में धूरि भरि भरि मूठी मेलिये ॥

## प्रार्थना

बारक सुमिरत तोहि होहि तिन्हहि सम्मुख सुखद ।  
क्यों न सँभारहि मोहि दया सिंधु दसरत्थ के ॥

## रामकी और रामप्रेमकी महिमा

साहिब होत सरोष सेवक को अपराध सुनि ।  
अपने देखे दोष सपनेहु राम न उर धरे ॥

## दोहा

तुलसी रामहि आपु तें सेवक की रुचि मीठि ।  
सीतापति से साहिबहि कैसे दीजै पीठि ॥  
तुलसी जाके होयगी अंतर बाहिर दीठि ।  
सो कि कृपालुहि देइगो केवटपालहि पीठि ॥  
प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।  
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सील निधान ॥

## उद्धोधन

रे मन सब सों निरस है सरस राम सों होहि ।  
भलो सिखावन देत है निसि दिन तुलसी तोहि ॥  
हरे चरहिं तापहि बरे फरें पसारहिं हाथ ।  
तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ॥  
स्वारथ सीता राम सों परमारथ सिय राम ।  
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा कहु काम ॥  
स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एक ही ओर ।  
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥  
तुलसी स्वारथ राम हित परमारथ रघुबीर ।  
सेवक जाके लखन से पवनपूत रनधीर ॥  
ज्यों जग बैरी मीन को आपु सहित बिनु बारि ।  
त्योँ तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी बिचारि ॥

## तुलसीदासजीकी अभिलाषा

राम प्रेम बिनु दूबरो राम प्रेमहीं पीन ।  
रघुबर कबहुँक करहुगे तुलसिहि ज्यों जल मीन ॥

## रामप्रेमकी महत्ता

राम सनेही राम गति राम चरन रति जाहि ।  
तुलसी फल जग जनम को दियो बिधाता ताहि ॥  
आपु आपने तें अधिक जेहि प्रिय सीताराम ।  
तेहि के पग की पानही तुलसी तनु को चाम ॥

स्वारथ परमारथ रहित सीता राम सनेहँ ।  
तुलसी सो फल चारि को फल हमार मत एहँ ॥  
जे जन रूखे बिषय रस चिकने राम सनेहँ ।  
तुलसी ते प्रिय राम को कानन बसहि कि गेहँ ॥  
जथा लाभ संतोष सुख रघुबर चरन सनेह ।  
तुलसी जो मन खूँद सम कानन बसहुँ कि गेह ॥  
तुलसी जौ पै राम सों नाहिन सहज सनेह ।  
मूँड़ मुड़ायो बादिहीं भाँड़ भयो तजि गेह ॥

## रामविमुखताका कुफल

तुलसी श्रीरघुबीर तजि करै भरोसो और ।  
सुख संपति की का चली नरकहुँ नाहीं ठौर ॥  
तुलसी परिहरि हरि हरहि पाँवर पूजहिं भूत ।  
अंत फजीहत होहिंगे गनिका के से पूत ॥  
सेये सीता राम नहिं भजे न संकर गौरि ।  
जनम गँवायो बादिहीं परत पराई पौरि ॥  
तुलसी हरि अपमान तें होइ अकाज समाज ।  
राज करत रज मिलि गए सदल सकुल कुरुराज ॥  
तुलसी रामहि परिहरें निपट हानि सुन ओझ ।  
सुरसरि गत सोई सलिल सुरा सरिस गंगोझ ॥  
राम दूरि माया बढ़ति घटति जानि मन माँह ।  
भूरि होति रबि दूरि लखि सिर पर पगतर छाँह ॥  
साहिब सीतानाथ सों जब घटिहै अनुराग ।  
तुलसी तबही भालतें भभरि भागिहैं भाग ॥  
करिहौ कोसलनाथ तजि जबहिं दूसरी आस ।  
जहाँ तहाँ दुख पाइहौ तबही तुलसीदास ॥  
बिंधि न ईधन पाइए सागर जुरे न नीर ।  
परै उपास कुबेर घर जो बिपच्छ रघुबीरो ॥  
बरसा को गोबर भयो को चहै को करै प्रीति ।  
तुलसी तू अनुभवहि अब राम बिमुख की रीति ॥  
सबहिं समरथहि सुखद प्रिय अच्छम प्रिय हितकारि ।  
कबहुँ न काहुहि राम प्रिय तुलसी कहा बिचारि ॥  
तुलसी उद्यम करम जुग जब जेहि राम सुडीठि ।  
होइ सुफल सोइ ताहि सब सनमुख प्रभु तन पीठि ॥  
राम कामतरु परिहरत सेवत कलि तरु टूँठ ।  
स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूँठ ॥

## कल्याणका सुगम उपाय

निज दूषन गुन राम के समुझें तुलसीदास ।  
होइ भलो कलिकाल हूँ उभय लोक अनयास ॥  
कै तोहि लागहिं राम प्रिय कै तू प्रभु प्रिय होहि ।  
दुइ में रुचे जो सुगम सो कीबे तुलसी तोहि ॥  
तुलसी दुइ महुँ एक ही खेल छाँड़ि छल खेलु ।  
कै करु ममता राम सों के ममता परहेलु ॥

## श्रीरामजीकी प्राप्तिका सुगम उपाय

निगम अगम साहेब सुगम राम साँचिली चाह ।  
अंबु असन अवलोकित सुलभ सबै जग माँह ॥  
सनमुख आवत पथिक ज्यों दिँएँ दाहिनो बाम ।  
तैसोइ होत सु आप को त्यों ही तुलसी राम ॥

रामप्रेमके लिये वैराग्यकी आवश्यकता

राम प्रेम पथ पेखिए दिँएँ बिषय तन पीठि ।  
तुलसी केंचुरि परिहरें होत साँपहू दीठि ॥  
तुलसी जौ लौ बिषय की मुधा माधुरी मीठि ।  
तौ लौ सुधा सहस्र सम राम भगति सुठि सीठि ॥

शरणागतिकी महिमा

जैसो तैसो रावरो केवल कोसलपाल ।  
तौ तुलसी को है भलो तिहूँ लोक तिहूँ काल ॥  
है तुलसी कें एक गुन अवगुन निधि कहैं लोग ।  
भलो भरोसो रावरो राम रीझिबे जोग ॥

भक्तिका स्वरूप

प्रीति राम सों नीति पथ चलिय राग रिस जीति ।  
तुलसी संतन के मते इहै भगति की रीति ॥

कलियुगसे कौन नहीं छला जाता

सत्य बचन मानस विमल कपट रहित करतूति ।  
तुलसी रघुबर सेवकहि सकै न कलिजुग धूति ॥  
तुलसी सुखी जो राम सों दुखी सो निज करतूति ।  
करम बचन मन ठीक जेहि तेहि न सकै कलि धूति ॥

गोस्वामीजीकी प्रेम-कामना

नातो नाते राम कें राम सनेहूँ सनेहु ।  
तुलसी माँगत जोरि कर जनम जनम सिव देहु ॥  
सब साधनको एक फल जेहिं जान्यो सो जान ।  
ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं राम धरें धनु बान ॥  
जौ जगदीस तौ अति भलो जौ महीस तौ भाग ।  
तुलसी चाहत जनम भरि राम चरन अनुराग ॥  
परौ नरक फल चारि सिसु मीच डाकिनी खाउ ।  
तुलसी राम सनेह को जो फल सो जरि जाउ ॥

रामभक्तके लक्षण

हित सों हित, रति राम सों, रिपु सों बैर बिहाउ ।  
उदासीन सब सों सरल तुलसी सहज सुभाउ ॥  
तुलसी ममता राम सों समता सब संसार ।  
राग न रोष न दोष दुख दास भए भव पार ॥

उद्धोधन

रामहि डरु करु राम सों ममता प्रीति प्रतीति ।  
तुलसी निरुपधि राम को भएँ हारेहूँ जीति ॥  
तुलसी राम कृपालु सों कहि सुनाउ गुन दोष ।  
होय दूबरी दीनता परम पीन संतोष ॥  
सुमिरन सेवा राम सों साहब सों पहिचानि ।  
ऐसेहु लाभ न ललक जो तुलसी नित हित हानि ॥  
जाने जानन जोइए बिनु जाने को जान ।  
तुलसी यह सुनि समुझि हियँ आनु धरें धनु बान ॥  
करमठ कठमलिया कहैं ग्यानी ग्यान बिहीन ।  
तुलसी त्रिपथ बिहाइ गो राम दुआरें दीन ॥  
बाधक सब सब के भए साधक भए न कोइ ।  
तुलसी राम कृपालु तें भलो होइ सो होइ ॥

शिव और रामकी एकता

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।  
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास ॥  
बिलग बिलग सुख संग दुख जनम मरन सोइ रीति ।  
रहिअत राखे राम कें गए ते उचित अनीति ॥

रामप्रेमकी सर्वोत्कृष्टता

जाँय कहब करतूति बिनु जायँ जोग बिन छेम ।  
तुलसी जायँ उपाय सब बिना राम पद प्रेम ॥  
लोग मगन सब जोगही जोग जाँय बिनु छेम ।  
त्यों तुलसीके भावगत राम प्रेम बिनु नेम ॥

श्रीरामकी कृपा

राम निकाई रावरी है सबही को नीक ।  
जौ यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥  
तुलसी राम जो आदर्यो खोटो खरो खरोइ ।  
दीपक काजर सिर धर्यो धर्यो सुधर्यो धरोइ ॥  
तनु बिचित्र कायर बचन अहि अहार मन घोर ।  
तुलसी हरि भए पच्छधर ताते कह सब मोर ॥  
लहइ न फूटी कौड़िहू को चाहै केहि काज ।  
सो तुलसी महँगो कियो राम गरीब निवाज ॥  
घर घर माँगे टूक पुनि भूपति पूजे पाय ।

जे तुलसी तब राम बिनु ते अब राम सहाय ॥  
तुलसी राम सुदीठि तें निबल होत बलवान ।  
बैर बालि सुग्रीव कें कहा कियो हनुमान ॥  
तुलसी रामहु तें अधिक राम भगत जियँ जान ।  
रिनिया राजा राम भे धनिक भए हनुमान ॥  
कियो सुसेवक धरम कपि प्रभु कृतग्य जियँ जानि ।  
जोरि हाथ ठाढ़े भए बरदायक बरदानि ॥  
भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।  
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥  
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।  
सोइ सच्चिदानंदघन कर नर चरित उदार ॥  
हिरन्याच्छ्र भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।  
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥  
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।  
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥

### भगवान् की बाललीला

बाल बिभूषन बसन बर धूरि धूसरित अंग ।  
बालकेलि रघुबर करत बाल बंधु सब संग ॥  
अनुदिन अवध बधावने नित नव मंगल मोद ।  
मुदित मातु पितु लोग लखि रघुबर बाल बिनोद ॥  
राज अजिर राजत रुचिर कोसलपालक बाल ।  
जानु पानि चर चरित बर सगुन सुमंगल माल ॥  
नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ ।  
ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ ॥  
राम भरत लच्छिमन ललित सत्रु समन सुभ नाम ।  
सुमिरत दसरथ सुवन सब पूजहिं सब मन काम ॥  
बालक कोसलपाल के सेवकपाल कृपाल ।  
तुलसी मन मानस बसत मंगल मंजु मराल ॥  
भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।  
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल ॥  
निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।  
सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥

### प्रार्थना

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।  
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥

### भजनकी महिमा

बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।  
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥  
हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।  
भजिअ राम सब काम तजि अस बिचारि मन माहिं ॥

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।  
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥  
श्रीरघुवीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण ।  
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥  
लव निमेष परमानु जुग बरस कल्प सर चंड ।  
भजसि न मन तेहि राम कहँ कालु जासु कोदंड ॥  
तब लगि कुसल न जीव कहँ सपनेहुँ मन विश्राम ।  
जब लगि भजत न राम कहँ सोकधाम तजि काम ॥  
बिनु सतसंग न हरिकथा तेहिं बिनु मोह न भाग ।  
मोह गएँ बिनु रामपद होइ न दृढ अनुराग ॥  
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।  
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न ल विश्रामु ॥

### सोरठा

अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।  
भजहु राम रघुवीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥  
भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।  
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥  
कहहिं बिमलमति संत बेद पुरान बिचारि अस ।  
द्रवहिं जानकी कंत तब छूटै संसार दुख ॥  
बिनु गुरु होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।  
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥

### दोहा

रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।  
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान ॥  
जरउ सो संपति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।  
सनमुख होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ ॥  
सेइ साधु गुरु समुझि सिखि राम भगति थिरताइ ।  
लरिकाई को पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ ॥

### रामसेवककी महिमा

सबइ कहावत राम के सबहि राम की आस ।  
राम कहहिं जेहि आपनो तेहि भजु तुलसीदास ॥  
जेहि सरीर रति राम सों सोइ आदरहिं सुजान ।  
रुद्रदेह तजि नेहबस बानर भे हनुमान ॥  
जानि राम सेवा सरस समुझि करब अनुमान ।  
पुरुषा ते सेवक भए हर ते भे हनुमान ॥  
तुलसी रघुबर सेवकहि खल डाटत मन माखि ।  
बाजराज के बालकहि लवा दिखावत आँखि ॥  
रावन रिपुके दास तें कायर करहिं कुचालि ।  
खर दूषन मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि ॥  
पुन्य पाप जस अजस के भावी भाजन भूरि ।

संकट तुलसीदास को राम करहिंगे दूरि ॥  
 खेलत बालक ब्याल सँग मेलत पावक हाथ ।  
 तुलसी सिसु पितु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ ॥  
 तुलसी दिन भल साहु कहँ भली चोर कहँ राति ।  
 निसि बासर ता कहँ भलो मानै राम इताति ॥

#### राम महिमा

तुलसी जाने सुनि समुझि कृपासिंधु रघुराज ।  
 महँगे मनि कंचन किए सौधे जग जल नाज ॥

#### रामभजनकी महिमा

सेवा सील सनेह बस करि परिहरि प्रिय लोग ।  
 तुलसी ते सब राम सों सुखद सँजोग बियोग ॥  
 चारि चहत मानस अगम चनक चारि को लाहु ।  
 चारि परिहरें चारि को दानि चारि चख चाहु ॥

#### रामप्रेमकी प्राप्ति सुगम उपाय

सूधे मन सूधे बचन सूधी सब करतूति ।  
 तुलसी सूधी सकल विधि रघुबर प्रेम प्रसूति ॥

#### रामप्राप्तिमें बाधक

बेष बिसद बोलनि मधुर मन कटु करम मलीन ।  
 तुलसी राम न पाइऐ भाँ बिषय जल मीन ॥  
 बचन बेष तें जो बनइ सो बिगरइ परिनाम ।  
 तुलसी मन तें जो बनइ बनी बनाई राम ॥

#### राम अनुकूलतामें ही कल्याण है

नीच मीचु लै जाइ जो राम रजायसु पाइ ।  
 तौ तुलसी तेरो भलो न तु अनभलो अघाइ ॥

#### श्रीरामकी शरणागतवत्सलता

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि ।  
 महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥  
 बंधु बधू रत कहि कियो बचन निरुत्तर बालि ।  
 तुलसी प्रभु सुग्रीव की चितइ न कछु कुचालि ॥  
 बालि बली बलसालि दलि सखा कीन्ह कपिराज ।  
 तुलसी राम कृपालु को बिरद गरीब निवाज ॥  
 कहा बिभीषन लै मिल्यो कहा बिगार्यो बालि ।  
 तुलसी प्रभु सरनागतहि सब दिन आए पालि ॥  
 तुलसी कोसलपाल सो को सरनागत पाल ।

भज्यो बिभीषन बंधु भय भंज्यो दारिद काल ॥  
 कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।  
 चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु चाहि ॥  
 बलकल भूषन फल असन तून सज्या द्रुम प्रीति ।  
 तिन्ह समयन लंका दई यह रघुबर की रीति ॥  
 जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिऐँ दस माथ ।  
 सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥  
 अबिचल राज बिभीषनहि दीन्ह राम रघुराज ।  
 अजहुँ बिराजत लंक पर तुलसी सहित समाज ॥  
 कहा बिभीषन लै मिल्यो कहा दियो रघुनाथ ।  
 तुलसी यह जाने बिना मूढ़ मीजिहँ हाथ ॥  
 बैरि बंधु निसिचर अधम तज्यो न भरें कलंक ।  
 झूठें अघ सिय परिहरी तुलसी साईँ ससंक ॥  
 तेहि समाज कियो कठिन पन जेहिं तौल्यो कैलास ।  
 तुलसी प्रभु महिमा कहौँ सेवक को बिस्वास ॥  
 सभा सभासद निरखि पट पकरि उठायो हाथ ।  
 तुलसी कियो इगारहों बसन बेस जदुनाथ ॥  
 त्राहि तीनि कह्यो द्रौपदी तुलसी राज समाज ।  
 प्रथम बढे पट बिय बिकल चहत चकित निज काज ॥  
 सुख जीवन सब कोउ चहत सुख जीवन हरि हाथ ।  
 तुलसी दाता माग्नेउ देखिअत अबुध अनाथ ॥  
 कृपन देइ पाइअ परो बिनु साधें सिधि होइ ।  
 सीतापति सनमुख समुझि जौ कीजै सुभ सोइ ॥  
 दंडक बन पावन करन चरन सरोज प्रभाउ ।  
 ऊसर जामहिं खल तरहिं होइ रंक ते राउ ॥  
 बिनहिं रितु तरुबर फरत सिला द्रवहि जल जोर ।  
 राम लखन सिय करि कृपा जब चितवत जेहि ओर ॥  
 सिला सुतिय भइ गिरि तरे मृतक जिऐ जग जान ।  
 राम अनुग्रह सगुन सुभ सुलभ सकल कल्याण ॥  
 सिला साप मोचन चरन सुमिरहु तुलसीदास ।  
 तजहु सोच संकट मिटिहिं पूजहि मनकी आस ॥  
 मुए जिआए भालु कपि अवध बिप्रको पूत ।  
 सुमिरहु तुलसी ताहि तू जाको मारुति दूत ॥

#### प्रार्थना

काल करम गुन दोर जग जीव तिहारे हाथ ।  
 तुलसी रघुबर रावरो जानु जानकीनाथ ॥  
 रोग निकर तनु जरठपनु तुलसी संग कुलोग ।  
 राम कृपा लै पालिए दीन पालिबे जोग ॥  
 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।  
 अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥  
 भव भुअंग तुलसी नकुल डसत ग्यान हरि लेत ।  
 चित्रकूट एक औषधी चितवत होत सचेत ॥  
 हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।  
 साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥

## रामराज्यकी महिमा

राम राज राजत सकल धरम निरत नर नारि ।  
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि ॥  
राम राज संतोष सुख घर बन सकल सुपास ।  
तरु सुरतरु सुरधेनु महि अभिमत भोग विलास ॥  
खेती बनि बिद्या बनिज सेवा सिलिप सुकाज ।  
तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल राम कें राज ॥  
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।  
जीतहु मनहिं सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥  
कोपें सोच न पोच कर करिअ निहोर न काज ।  
तुलसी परमिति प्रीति की रीति राम कें राज ॥

## श्रीरामकी दयालुता

मुकुर निरखि मुख राम भू गनत गुनहि दै दोष ।  
तुलसी से सठ सेवकन्हि लखि जनि परहिं सरोष ॥

## श्रीरामकी धर्मधुरन्धरता

सहसनाम मुनि भनित सुनि तुलसी बल्लभ नाम ।  
सकुचित हियँ हँसि निरखि सिय धरम धुरंधर राम ॥

## श्रीसीताजीका अलौकिक प्रेम

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।  
मन विहँसे रघुवंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥

## श्रीरामकी कीर्ति

तुलसी बिलसत नखत निसि सरद सुधाकर साथ ।  
मुकुता झालरि झलक जनु राम सुजसु सिसु हाथ ॥  
रघुपति कीरति कामिनी क्यों कहै तुलसीदासु ।  
सरद अकास प्रकास ससि चारु चिबुक तिल जासु ॥  
प्रभु गुन गन भूषन बसन बिसद बिसेष सुबेस ।  
राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केस ॥  
राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।  
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु ॥  
रघुबर कीरति सज्जननि सीतल खलनि सुताति ।  
ज्यों चकोर चय चक्कवनि तुलसी चाँदनि राति ॥

## रामकथाकी महिमा

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।  
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।  
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥  
हरि हर जस सुर नर गिरहुँ बरनहिं सुकवि समाज ।  
हाँड़ी हाटक घटित चरु राँधे स्वाद सुनाज ॥

## राममहिमाकी अज्ञेयता

तिल पर राखेउ सकल जग विदित बिलोकत लोग ।  
तुलसी महिमा राम की कौन जानिबे जोग ॥

## श्रीरामजीके स्वरूपकी अलौकिकता

### सोरठा

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।  
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥

### ईश्वर-महिमा

### दोहा

माया जीव सुभाव गुन काल करम महदादि ।  
ईस अंक तें बढ़त सब ईस अंक बिनु बादि ॥

## श्रीरामजीकी भक्तवत्सलता

हित उदास रघुबर बिरह बिकल सकल नर नारि ।  
भरत लखन सिय गति समुझि प्रभु चख सदा सुवारि ॥

## सीता, लक्ष्मण और भरतके रामप्रेमकी अलौकिकता

सीय सुमित्रा सुवन गति भरत सनेह सुभाउ ।  
कहिबे को सारद सरस जनिबे को रघुराउ ॥  
जानि राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति ।  
सो सुनि गुनि तुलसी कहत हठ सठता की रीति ॥  
सब बिधि समरथ सकल कह सहि साँसति दिन राति ।  
भलो निबाहेउ सुनि समुझि स्वामिधर्म सब भाँति ॥

### भरत-महिमा

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरिहर पद पाइ ।  
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥  
संपति चकई भरत चक मुनि आयस खेलवार ।  
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार ॥  
सधन चोर मग मुदित मन धनी गही ज्यों फेंट ।  
त्योँ सुग्रीव बिभीषनहिं भई भरतकी भेंट ॥

राम सराहे भरत उठि मिले राम सम जानि ।  
तदपि बिभीषन कीसपति तुलसी गरत गलानि ॥  
भरत स्याम तन राम सम सब गुन रूप निधान ।  
सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब कल्याण ॥

#### लक्ष्मणमहिमा

ललित लखन मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह ।  
सुख संपति कीरति बिजय सगुन सुमंगल गेह ॥

#### शत्रुघ्नमहिमा

नाम सत्रुसूदन सुभग सुषमा सील निकेत ।  
सेवत सुमिरत सुलभ सुख सकल सुमंगल देत ॥

#### कौसल्यामहिमा

कौसल्या कल्याणमइ मूरति करत प्रनाम ।  
सगुन सुमंगल काज सुभ कृपा करहिं सियाराम ॥

#### सुमित्रामहिमा

सुमिरि सुमित्रा नाम जग जे तिय लेहिं सनेम ।  
सुअन लखन रिपुदवन से पावहिं पति पद प्रेम ॥

#### सीतामहिमा

सीताचरन प्रनाम करि सुमिरि सुनाम सुनेम ।  
होहिं तीय पतिदेवता प्राननाथ प्रिय प्रेम ॥

#### रामचरित्रकी पवित्रता

तुलसी केवल कामतरु रामचरित आराम ।  
कलितरु कपि निसिचर कहत हमहिं किए बिधि बाम ॥

#### कैकेयीकी कुटिलता

मातु सकल सानुज भरत गुरु पुर लोग सुभाउ ।  
देखत देख न कैकइहि लंकापति कपिराउ ॥  
सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।  
चलइ जोक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥

#### दशरथमहिमा

दसरथ नाम सुकामतरु फलइ सकलो कल्याण ।  
धरनि धाम धन धरम सुत सदगुन रूप निधान ॥

तुलसी जान्यो दसरथहिं धरमु न सत्य समान ।  
रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ॥  
राम बिरहँ दसरथ मरन मुनि मन अगम सुमीचु ।  
तुलसी मंगल मरन तरु सुचि सनेह जल सीचु ॥

#### सोरठा

जीवन मरन सुनाम जैसें दसरथ राय को ।  
जियत खिलाए राम राम बिरहँ तनु परिहरेउ ॥

#### जटायुका भाग्य

#### दोहा

प्रभुहि बिलोकत गोद गत सिय हित घायल नीचु ।  
तुलसी पाई गीधपति मुकुति मनोहर मीचु ॥  
बिरत करम रत भगत मुनि सिद्ध ऊँच अरु नीचु ।  
तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराज की मीचु ॥  
मुए मरत मरिहँ सकल घरी पहरके बीचु ।  
लही न काहँ आजु लौं गीधराज की मीचु ॥  
मुँए मुकुत जीवत मुकुत मुकुत मुकुत हँ बीचु ।  
तुलसी सबही तें अधिक गीधराज की मीचु ॥  
रघुबर बिकल बिहंग लखि सो बिलोकि दोउ बीर ।  
सिय सुधि कहि सियल राम कहि देह तजी मति धीर ॥  
दसरथ तें दसगुन भगति सहित तासु करि काजु ।  
सोचत बंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराजु ॥

#### रामकृपाकी महत्ता

केवट निसिचर बिहग मृग किए साधु सनमानि ।  
तुलसी रघुबर की कृपा सकल सुमंगल खानि ॥

#### हनुमत्स्मरणकी महत्ता

मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत ।  
सकल सिद्धि कर कमल तल सुमिरत रघुबर दूत ॥  
धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमार ।  
अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि बिचारु ॥  
सुख मुद मंगल कुमुद बिधु सुगुन सरोरुह भानु ।  
करहु काज सब सिद्धि सुभ आनि हिउँ हनुमानु ॥  
सकल काज सुभ समउ भल सगुन सुमंगल जानु ।  
कीरति बिजय बिभूति भलि हियँ हनुमानहि आनु ॥  
सूर सिरोमनि साहसी सुमति समीर कुमार ।  
सुमिरत सब सुख संपदा मुद मंगल दातार ॥

#### बाहुपीड़ाकी शान्तिके लिये प्रार्थना

तुलसी तनु सर सुख जलज भुज रुज गज बरजोर ।  
दलत दयानिधि देखिए कपि केसरी किसोर ॥  
भुज तरु कोटर रोग अहि बरबस कियो प्रबेस ।  
बिहगराज बाहन तुरत काढ़िअ मिटै कलेस ॥  
बाहु बिटप सुख बिहंग थलु लगी कुपीर कुआगि ।  
राम कृपा जल सीचिऐ बेगि दीन हित लागि ॥

काशीमहिमा

सोरठा

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर ।  
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥

शंकरमहिमा

जरत सकल सुर वृंद बिषम गरल जेहिं पान किय ।  
तेहि न भजसि मन मंद को कृपालु संकर सरिस ॥

शंकरजीसे प्रार्थना

दोहा

बासर ढासनि के ढका रजनी चहुँ दिसि चोर ।  
संकर निज पुर राखिए चितै सुलोचन कोर ॥  
अपनी बीसी आपुहीं पुरिहिं लगाए हाथ ।  
केहि बिधि बिनती बिस्व की करौ बिस्व के नाथ ॥

भगवल्लीलाकी दुर्जेयता

और करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।  
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥

प्रेममें प्रपञ्च बाधक है

प्रेम सरीर प्रपंच रुज उपजी अधिक उपाधि ।  
तुलसी भली सुबैदई बेगि बाँधिऐ ब्याधि ॥

अभिमान ही बन्धनका मूल है

हम हमार आचार बड़ भूरि भार धरि सीस ।  
हठि सठ परबस परत जिमि कीर कोस कृमि कीस ॥

जीव और दर्पणके प्रतिबिम्बकी समानता

केहिं मग प्रबिसति जाति केहिं कहु दरपनमें छाहँ ।  
तुलसी ज्यो जग जीव गति करि जीव के नाहँ ॥

भगवन्मायाकी दुर्जेयता

सुखसागर सुख नींद बस सपने सब करतार ।  
माया मायानाथ की को जग जाननिहार ॥

जीवकी तीन दशाएँ

जीव सीव सम सुख सयन सपनें कछु करतूति ।  
जागत दीन मलीन सोइ बिकल बिषाद बिभूति ॥

सृष्टि स्वप्नवत् है

सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।  
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥

हमारी मृत्यु प्रतिक्षण हो रही है

तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच ।  
चपरि चपेटे देत नित केस गहें कर मीच ॥

कालकी करतूत

करम खरी कर मोह थल अंक चराचर जाल ।  
हनत गुनत गनि गुनि हनत जगत ज्यौतिषी काल ॥

इन्द्रियोंकी सार्थकता

कहिबे कहँ रसना रची सुनिबे कहँ किये कान ।  
धरिबे कहँ चित हित सहित परमारथहि सुजान ॥

सगुणके बिना निर्गुणका निरूपण असम्भव है

ग्यान कहै अग्यान बिनु तम बिनु कहै प्रकास ।  
निरगुन कहै जो सगुन बिनु सो गुरु तुलसीदास ॥

निर्गुणकी अपेक्षा सगुण अधिक प्रामाणिक है

अंक अगुन आखर सगुन समुझिअ उभय प्रकार ।  
खोएँ राखें आपु भल तुलसी चारु बिचार ॥

विषयासक्तिका नाश हुए बिना ज्ञान अधूरा है

परमारथ पहिचानि मति लसति बिषयँ लपटानि ।

निकसि चिता तें अधजरित मानहुँ सती परानि ॥  
विषयासक्त साधुकी अपेक्षा वैराग्यवान् गृहस्थ अच्छा है  
सीस उधारन किन कहेउ बरजि रहे प्रिय लोग ।  
घरहीं सती कहावती जरती नाह बियोग ॥

साधुके लिये पूर्ण त्यागकी आवश्यकता

खरिया खरी कपूर सब उचित न पिय तिय त्याग ।  
कै खरिया मोहि मेलि कै बिमल बिबेक बिराग ॥  
भगवतप्रेममें आसक्ति बाधक है, गृहस्थाश्रम नहीं  
घर कीन्हें घर जात है घर छोड़ै घर जाइ ।  
तुलसी घर बन बीचहीं राम प्रेम पुर छाइ ॥

संतोषपूर्वक घरमें रहना उत्तम है

दिउँ पीठि पाछें लगे सनमुख होत पराइ ।  
तुलसी संपति छाँह ज्यों लखि दिन बैठि गँवाइ ॥

विषयों की आशा ही दुःख का मूल है

तुलसी अद्भुत देवता आसा देवी नाम ।  
सेएँ सोक समर्पई बिमुख भएँ अभिराम ॥

मोह-महिमा

सोई सेवर तेइ सुवा सेवत सदा बसंत ।  
तुलसी महिमा मोह की सुनत सराहत संत ॥

विषय-सुखकी हेयता

करत न समुझत झूठ गुन सुनत होत मति रंक ।  
पारद प्रगट प्रपंचमय सिद्धिउ नाउँ कलंक ॥

लोभकी प्रबलता

ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।  
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥

धन और ऐश्वर्यके मद तथा कामकी व्यापकता

श्रीमद बक्र न कीन्हि केहि प्रभुता बधिर न काहि ।  
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥

मायाकी फौज

ब्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥

काम, क्रोध, लोभकी प्रबलता

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।  
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ ॥

काम, क्रोध, लोभके सहायक

लोभ कें इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।  
क्रोध के परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ॥

मोहकी सेना

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।  
तिन्ह महुँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ॥

अग्नि, समुद्र, प्रबल स्त्री और कालकी समानता

काह न पावक जाति सक का न समुद्र समाइ ।  
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥

स्त्री झगड़े और मृत्युकी जड़ है

जनमपत्रिका बरति कै देखहु मनहिं बिचारि ।  
दारुन बैरी मीचु के बीच बिराजति नारि ॥

उद्धोधन

दीपसिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ।  
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥

गृहासक्ति श्रीरघुनाथजीके स्वरूपके ज्ञानमें बाधक है

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।  
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे भव कूप ॥

काम-क्रोधादि एक-एक अनर्थकारक है फिर सबकी

तो बात ही क्या है

ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।  
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ॥

किसके मनको शान्ति नहीं मिलती ?

ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम ।  
भूत द्रोह रत मोहबस राम बिमुख रति काम ॥

### ज्ञानमार्गकी कठिनता

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।  
होइ धुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥

भगवद्भजनके अतिरिक्त और सब प्रयत्न व्यर्थ है

खल प्रबोध जग सोध मन को निरोध कुल सोध ।  
करहिं ते फोटक पचि मरहिं सपनेहुँ सुख न सुबोध ॥

### संतोषकी महिमा

#### सोरठा

कोउ विश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।  
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥

मायाकी प्रबलता और उसके तरनेका उपाय

सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।  
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥

गोस्वामीजीकी अनन्यता

#### दोहा

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।  
एक राम धन स्याम हित चातक तुलसीदास ॥

प्रेमकी अनन्यताके लिये चातकका उदाहरण

जौ घन बरषै समय सिर जौ भरि जनम उदास ।  
तुलसी या चित चातकहि तऊ तिहारी आस ॥

चातक तुलसी के मतें स्वातिहुँ पिऐ न पानि ।  
प्रेम तृषा बाढ़ति भली घटें घटेगी आनि ॥  
रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गे अंग ।  
तुलसी चातक प्रेम को नित नूतन रुचि रंग ॥  
चढ़त न चातक चित कबहुँ प्रिय पयोद के दोष ।  
तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोख ॥  
बरषि परुष पाहन पयद पंख करौ टुक टुक ।  
तुलसी परी न चाहिऐ चतुर चातकहि चूक ॥  
उपल बरसि गरजत तरजि डारत कुलिस कठोर ।

चितव कि चातक मेघ तजि कबहुँ दूसरी ओर ॥  
पबि पाहन दामिनि गरज झरि झकोर खरि खीझि ।  
रोष न प्रीतम दोष लखि तुलसी रागहि रीझि ॥  
मान राखिबो माँगिबो पिय सों नित नव नेहु ।  
तुलसी तीनिउ तब फबै जौ चातक मत लेहु ॥  
तुलसी चातक ही फबै मान राखिबो प्रेम ।  
बक्र बुंद लखि स्वातिहुँ निदरि निबाहत नेम ॥  
तुलसी चातक माँगनो एक एक घन दानि ।  
देत जो भू भाजन भरत लेत जो घूटक पानि ॥  
तीनि लोक तिहुँ काल जस चातक ही के माथ ।  
तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ ॥  
प्रीति पपीहा पयद की प्रगट नई पहिचानि ।  
जाचक जगत कनाउड़ो कियो कनौड़ा दानि ॥  
नहिं जाचत नहिं संग्रही सीस नाइ नहिं लेइ ।  
ऐसे मानी मागनेहि को बारिद बिन देइ ॥  
को को न ज्यायो जगत में जीवन दायक दानि ।  
भयो कनौड़ो जाचकहि पयद प्रेम पहिचानि ॥  
साधन साँसति सब सहत सबहि सुखद फल लाहु ।  
तुलसी चातक जलद की रीझि बूझि बुध काहु ॥  
चातक जीवन दायकहि जीवन समयँ सुरीति ।  
तुलसी अलख न लखि परै चातक प्रीति प्रतीति ॥  
जीव चराचर जहँ लगे है सब को हित मेह ।  
तुलसी चातक मन बस्यो घन सों सहज सनेह ॥  
डोलत बिपुल बिहंग बन पिअत पोखरनि बारि ।  
सुजस धवल चातक नवल तुही भुवन दस चारि ॥  
मुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर ।  
सुजस धवल चातक नवल रह्यो भुवन भरि तोर ॥  
बास बेस बोलनि चलनि मानस मंजु मराल ।  
तुलसी चातक प्रेम की कीरति बिसद बिसाल ॥  
प्रेम न परखिअ परुषपन पयद सिखावन एह ।  
जग कह चातक पातकी ऊसर बरसै मेह ॥  
होइ न चातक पातकी जीवन दानि न मूढ़ ।  
तुलसी गति प्रह्लाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़ ॥  
गरज आपनी सबन को गरज करत उर आनि ।  
तुलसी चातक चतुर भो जाचक जानि सुदानि ॥  
चरग चंगु गत चातकहि नेम प्रेम की पीर ।  
तुलसी परबस हाइ पर परिहैं पुहुमी नीर ॥  
बध्यो बधिक पर्यो पुन्य जल उलटि उठाई चोंच ।  
तुलसी चातक प्रेमपट मरतहुँ लगी न खोंच ॥  
अंड फोरि कियो चेदुवा तुष पर्यो नीर निहारि ।  
गहि चंगुल चातक चतुर डार्यो बाहिर बारि ॥  
तुलसी चातक देत सिख सुतहि बारही बार ।  
तात न तर्पन कीजिऐ बिना बारिधर धार ॥

#### सोरठा

जिअत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि ।  
 सुरसरिहू को बारि मरत न माँगेउ अरध जल ॥  
 सुनु रे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेम की ।  
 परिहरि चारिउ मास जौ अँचवै जल स्वाति को ॥  
 जाचै बारह मास पिये पपीहा स्वाति जल ।  
 जान्यो तुलसीदास जोगवत नेही नेह मन ॥

### दोहा

तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पिआस ।  
 पिअत स्वाति जल जान जग जाँचत बारह मास ॥  
 आलबाल मुकुताहलनि हिय सनेह तरु मूल ।  
 होइ हेतु चित चातकहि स्वाति सलिलु अनुकूल ॥  
 उष्ण काल अरु देह खिन मन पंथी तन ऊख ।  
 चातक बतियाँ न रुचीं अन जल सीचे रूख ॥  
 अन जल सीचे रूख की छाया तें बरु घाम ।  
 तुलसी चातक बहुत हैं यह प्रवीन को काम ॥  
 एक अंग जो सनेहता निसि दिन चातक नेह ।  
 तुलसी जासों हित लगै वहि अहार वहि देह ॥

### एकाङ्गी अनुरागके अन्य उदाहरण

बिबि रसना तनु स्याम है बंक चलनि बिष खानि ।  
 तुलसी जस श्रवननि सुन्यो सीस समरप्यो आनि ॥

### मृगका उदाहरण

आपु ब्याध को रूप धरि कुहौ कुरंगहि राग ।  
 तुलसी जो मृग मन मुरै परै प्रेम पट दाग ॥

### सर्पका उदाहरण

तुलसी मनि निज दुति फनिहि ब्याधिहि देउ दिखाइ ।  
 बिछुरत होइ नब आँधरो ताते प्रेम न जाइ ॥

### कमलका उदाहरण

जरत तुहिन लखि बनज बन रबि दै पीठि पराउ ।  
 उदय बिकस अथवत सकुच मिटै न सहज सुभाउ ॥

### मच्छलीका उदाहरण

देउ आपनें हाथ जल मीनहि माहुर घोरि ।  
 तुलसी जिऐ जो बारि बिनु तौ तु देहि कबि खोरि ॥  
 मकर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह ।  
 तुलसी एकै मीन को है साँचिलो सनेह ॥

### मयूरशिखा बूटीका उदाहरण

तुलसी मिटे न मरि मिटेहुँ साँचो सहज सनेह ।  
 मोरसिखा बिनु मूरिहुँ पलुहत गरजत मेह ॥  
 सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत करत सब कोइ ।  
 तुलसी मीन पुनीत ते त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥

### अनन्यताकी महिमा

तुलसी जप तप नेम व्रत सब सबहीं तें होइ ।  
 लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ॥

### गाढ़े दिनका मित्र ही मित्र है

कुदिन हितू सो हित सुदिन हित अनहित किन होइ ।  
 ससि छबि हर रबि सदन तउ मित्र कहत सब कोइ ॥

### बराबरीका स्नेह दुःखदायक होता है

कै लघुकै बड़ मीत भल सम सनेह दुख सोइ ।  
 तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस मिलें महाबिष होइ ॥

### मित्रतामें छल बाधक है

मान्य मीत सों सुख चहैं सो न छुऐ छल छाहैं ।  
 ससि त्रिसंकु कैकेइ गति लखि तुलसी मन माहैं ॥  
 कहिअ कठिन कृत कोमलहुँ हित हठि होइ सहाइ ।  
 पलक पानि पर ओड़िअत समुझि कुघाइ सुघाइ ॥

### वैर और प्रेम अंधे होते है

तुलसी वैर सनेह दोउ रहित बिलोचन चारि ।  
 सुरा सेवरा आदरहिं निंदहिं सुरसरि बारि ॥

### दानी और याचकका स्वभाव

रुचै मागनेहि मागिबो तुलसी दानिहि दानु ।  
 आलस अनख न आचरज प्रेम पिहानी जानु ॥

### प्रेम और वैर ही अनुकूलता और प्रतिकूलतामें हेतु हैं

अमिअ गारि गारेउ गरल गारि कीन्ह करतार ।  
 प्रेम वैर की जननि जुग जानहिं बुध न गवार ॥

### स्मरण और प्रिय भाषण ही प्रेमकी निशानी है

सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहहिं प्रिय बैन ।  
ते पै तिन्ह के जाहिं घर जिन्ह के हिऐं न नैन ॥

स्वार्थ ही अच्छाई-बुराईका मानदण्ड हैं

हित पुनीत सब स्वार्थहिं अरि असुद्ध बिनु चाड़ ।  
निज मुख मानिक सम दसन भूमि परे ते हाड़ ॥

संसारमें प्रेममार्गके अधिकारी बिरले ही हैं

माखी काक उलूक बक दादुर से भए लोग ।  
भले ते सुक पिक मोरसे कोउ न प्रेम पथ जोग ॥

कलियुगमें कपटकी प्रधानता

हृदयँ कपट बर बेष धरि बचन कहहिं गढ़ि छोलि ।  
अब के लोग मयूर ज्यों क्यों मिलिए मन खोलि ॥

कपट अन्ततक नहीं निभता

चरन चोंच लोचन रँगौ चलौ मराली चाल ।  
छीर नीर बिबरन समय बक उधरत तेहि काल ॥

कुटिल मनुष्य अपनी कुटिलताको नहीं छोड़ सकता

मिलै जो सरलहि सरल है कुटिल न सहज बिहाइ ।  
सो सहेतु ज्यों बक्र गति ब्याल न बिलहिं समाइ ॥  
कृसधन सखहि न देव दुख मुएहुँ न मागव नीच ।  
तुलसी सज्जन की रहनि पावकल पानी बीच ॥  
संग सरल कुटिलहि भएँ हरि हर करहिं निबाहु ।  
ग्रह गनती गनि चतुर विधि कियो उदर बिनु राहु ॥

स्वभावकी प्रधानता

नीच निचाई नहिं तजइ सज्जनहुँ के संग ।  
तुलसी चंदन बिटप बसि बिनु विष भए न भुअंग ॥  
भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।  
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥  
मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गरल सम साँच ।  
तुलसी छुअत पराइ ज्यों पारद पावक आँच ॥

सत्संग और असत्संगका परिणामगत भेद

संत संग अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ ।  
कहहि संत कवि कोविद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥

सुकृत न सुकृती परिहरइ कपट न कपटी नीच ।  
मरत सिखावन देइ चले गीधराज मारीच ॥

सज्जन और दुर्जनका भेद

सुजन सुतरु बन ऊख सम खल टंकिका रुखान ।  
परहित अनहित लागि सब साँसति सहर समान ॥  
पिअहि सुमन रस अलिल बिटप काटि कोल फल खात ।  
तुलसी तरुजीवी जुगल सुमति कुमति की बात ॥

अवसरकी प्रधानता

अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दिऐँ का लाख ।  
दुइज न चंदा देखिए उदौ कहा भरि पाख ॥

भलाई करना बिरले ही जानते हैं

ग्यान अनभले को सबहि भले भलेहु काउ ।  
सीग सँड़ रद लूम नख करत जीव जड़ घाउ ॥

संसारमें हित करनेवाले कम है

तुलसी जग जीवन अहित कतहुँ कोउ हित जानि ।  
सोषक भानु कृसानु महि पवन एक धन दानि ॥  
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।  
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥  
जलचर थलचर गगनचर देव दनुज नर नाग ।  
उत्तम मध्यम अधम खल दस गुन बढ़त विभाग ॥  
बलि मिस देखे देवता कर मिस मानव देव ।  
मुए मार सुबिचार हत स्वार्थ साधन एव ॥  
सुजन कहत भल पोच पथ पापि न परखइ भेद ।  
करमनास सुरसरित मिस विधि निषेध बद वेद ॥

वस्तुही प्रधान है, आधार नहीं

मनि भाजन मधु पारई पूरन अमी निहारि ।  
का छाँड़िअ का संग्रहिअ कहहु बिबेक बिचारि ॥

प्रीति और वैरकी तीन श्रेणियाँ

उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानि ।  
प्रीति परिच्छा तिहुन की बैर बितिक्रम जानि ॥

जिसे सज्जन ग्रहण करते है,उसे दुर्जन त्याग देते हैं

पुन्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पाँच ।

लहहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहु सिखावन साँच ॥

प्रकृतिके अनुसार व्यवहारका भेद भी आवश्यक हैं

नीच निरादरही सुखद आदर सुखद बिसाल ।  
कदरी बदरी बिटप गति पेखहु पनस रसाल ॥

अपना आचरण सभी को अच्छा लगता है

तुलसी अपनो आचरण भलो न लागत कासु ।  
तेहि न बसात जो खात नित लहसुनहू को बासु ॥

भाग्यवान् कौन है ?

बुध सो बिबेकी बिमलमति जिन्ह के रोष न राग ।  
सुहद सराहत साधु जेहि तुलसी ताको भाग ॥

साधुजन किसकी सराहना करते है

आपु आपु कहँ सब भलो अपने कहँ कोइ कोइ ।  
तुलसी सब कहँ जो भलो सुजन सराहिअ सोइ ॥

संगकी महिमा

तुलसी भलो सुसंग तें पोच कुसंगति सोइ ।  
नाउ किंनरी तीर असि लोह बिलोकहु लोइ ॥  
गुरु संगति गुरु होइ सो लघु संगति लघु नाम ।  
चार पदारथ में गनै नरक द्वारहू काम ॥  
तुलसी गुरु लघुता लहत लघु संगति परिनाम ।  
देवी देव पुकारिअत नीच नारि नर नाम ॥  
तुलसी किँ कुसंग धिति होहिं दाहिने बाम ।  
कहि सुनि सकुचिअ सूम खल गत हरि संकर नाम ॥  
बसि कुसंग चह सुजनता ताकी आस निरास ।  
तीरथहू को नाम भो गया मगह के पास ॥  
राम कृपाँ तुलसी सुलभ गंग सुसंग समान ।  
जो जल परै जो जन मिलै कीजै आपु समान ॥  
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।  
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जल लखहिं सुलच्छन लोग ॥  
जनम जोग में जानिअत जग बिचित्र गति देखि ।  
तुलसी आखर अंक रस रंग बिभेद बिसेषि ॥  
आखर जोरि बिचार करु सुमति अंक लिखि लेखु ।  
जोग कुजोग सुजोग मय जग गति समुझि बिसेषु ॥

मार्ग-भेदसे फल-भेद

करु बिचार चलु सुपथ भल आदि मध्य परिनाम ।

उलटि जपें 'जारा मरा' सूधें 'राजा राम' ॥

भलेके भला ही हो, यह नियम नहीं है

होइ भले के अनभलो होइ दानि के सूम ।  
होइ कपूत सपूत कें ज्यों पावक में धूम ॥

विवेककी आवश्यकता

जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार ।  
संत हंक गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥

सोरठा

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।  
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥

दोहा

जो जो जेहिं जेहिं रल मगन तहँ सो मुदित मन मानि ।  
रसगुन दोष बिचारिबो रसिक रीति पहिचानि ॥  
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।  
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥

कभी-कभी भलेको बुराई भी मिल जाती है

लोक बेदहू लौ दगो नाम भले को पोच ।  
धर्मराज जम गाज पबि कहत सकोच न सोच ॥

सज्जन और दुर्जनकी परीक्षाके भिन्न-भिन्न प्रकार

बिरुचि परखिए सुजन जन राखि परखिए मंद ।  
बड़वानल सोषत उदधि हरष बढ़ावत चंद ॥

नीच पुरुषकी नीचता

प्रभु सनमुख भाँ नीच नर होत निपट बिकराल ।  
रबिरुख लखि दरपन फटिक उगिलत ज्वालाजाल ॥

सज्जनकी सज्जनता

प्रभु समीप गत सुजन जन होत सुखद सुबिचार ।  
लवन जलधि जीवन जलद बरषत सुधा सुबारि ॥  
नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सीचहिं ऊख ।  
पोषत पयद समान सब विष पियूष के रूख ॥  
बरषि बिस्व हरषित करत हरत ताप अघ प्यास ।

तुलसी दोष न जलद को जो जल जरै जवास ॥  
अमर दानि जाचक मरहिं मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ।  
तुलसी जाचक पातकी दातहि दूषन देहिं ॥

#### नीचनिन्दा

लखि गयंद लै चलत भजि स्वान सुखानो हाड़ ।  
गज गुन मोल अहार बल महिमा जान कि राड़ ॥

#### सज्जनमहिमा

कै निदरहुँ कै आदरहुँ सिंघहि स्वान सिआर ।  
हरष बिषाद न केसरिहि कुंजर गंजनिहार ॥

#### दुर्जनोका स्वभाव

ठाढो द्वार न दै सकैं तुलसी जे नर नीच ।  
निंदहि बलिल हरिचंद को का कियो करन दधीच ॥

नीचकी निन्दासे उत्तम पुरुषोंका कुछ नहीं घटता

ईस सीस बिलसत विमल तुलसी तरल तरंग ।  
स्वान सरावग के कहैं लघुता लहै न गंग ॥  
तुलसी देवल देव को लागे लाख करोरि ।  
काक अभागें हगि भयों महिमा भई कि थोरि ॥

गुणोंका ही मूल्य है, दूसरोंके आदर-अनादरका नहीं

निज गुन घटत न नाग नग परखि परिहरत कोल ।  
तुलसी प्रभु भूषन किए गुंजा बड़े न मोल ॥

श्रेष्ठ पुरुषोंकी महिमाको कोई नहीं पा सकता

राकापति षोड़स उअहिं तारा गन समुदाइ ।  
सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रवि राति न जाइ ॥

दुष्ट पुरुषोंद्वारा की हुई निन्दा-स्तुतिका कोई मूल्य नहीं है

भलो कहहिं बिनु जानेहुँ बिनु जानें अपबाद ।  
ते नर गादुर जानि जियै करिय न हरष बिषाद ॥

डाह करनेवालोंका कभी कल्याण नहीं होता

पर सुख संपति देखि सुनि जरहिं जे जड़ बिनु आगि ।  
तुलसी तिन के भागते चलै भलाई भागि ॥

दूसरोंकी निन्दा करनेवालोंका मुहँ काला होता है

तुलसी जे कीरति चहहिं पर की कीरति खोइ ।  
तिनके मुहँ मसि लागिहैं मिटहि न मरिहै धोइ ॥

#### मिथ्या अभिमानका दुष्परिणाम

तन गुन धन महिमा धरम तेहि बिनु जेहि अभिमान ।  
तुलसी जिअत बिडंबना परिनामहु गत जान ॥

#### नीचा बनकर रहना ही श्रेष्ठ है

सासु ससुर गुरु मातु पितु प्रभु भयो चहै सब कोइ ।  
होनी दूजी ओर को सुजन सराहिअ सोइ ॥

#### सज्जन स्वाभाविक ही पूजनीय होते हैं

सठ सहि साँसति पति लहत सुजन कलेस न कायँ ।  
गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिए गंडकि सिला सुभायँ ॥

#### भूप-दरबारकी निन्दा

बड़े विबुध दरबार तें भूमि भूप दरबार ।  
जापक पूजत पेखिअत सहत निरादर भार ॥

#### छल-कपट सर्वत्र वर्जित है

बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिअ न दिऐँ कलेस ।  
बावन बलि सों छल कियो दियो उचित उपदेस ॥  
भलो भले सों छल किएँ जनम कनौड़ो होइ ।  
श्रीपति सिर तुलसी लसति बलि बावन गति सोइ ॥  
विबुध काज बावन बलिहि छलो भलो जिय जानि ।  
प्रभुता तजि बस भे तदपि मन की गइ न गलानि ॥

#### जगत् में सब सीधोंको तंग करते हैं

सरल बक्र गति पंच ग्रह चपरि न चितवत काहु ।  
तुलसी सूधे सूर ससि समय बिडंबित राहु ॥

#### दुष्ट-निन्दा

खल उपकार बिकार फल तुलसी जान जहान ।  
मेढुक मर्कट बनिक बक्र कथा सत्य उपखान ॥  
तुलसी खल बानी मधुर सुनि समुझिअ हियँ हेरि ।  
राम राज बाधक भई मूढ़ मंधरा चेरि ॥  
जोंक सूधि मन कुटिल गति खल बिपरीत बिचारु ।

अनहित सोनित सोष सो सो हित सोषनिहारु ॥  
नीच गुड़ि ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास ।  
ढीलि दिऐँ गिरि परत महि खैंचत चढत अकास ॥  
भरदर बरसत कोस सत बचै जे बूँद बराइ ।  
तुलसी तेउ खल बचन कर हुए गए न पराइ ॥  
पेरत कोल्हू मेलि तिल तिली सनेही जानि ।  
देखि प्रीति की रीति यह अब देखिबी रिसानि ॥  
सहवासी काचो गिलहिं पुरजन पाक प्रवीन ।  
कालछेप केहि मिलि करहिं तुलसी खग मृग मीन ॥  
जासु भरोसैं सोइऐे राखि गोद में सीस ।  
तुलसी तासु कुचाल तें रखवारो जगदीस ॥  
मार खोज लै सौँह करि करि मत लाज न त्रास ।  
मुए नीच ते मीच बिनु जे इन कें बिस्वास ॥  
परद्रोही परदार रत परधन पर अपवाद ।  
ते नर पावँर पापमय देह धरें मनुजाद ॥

कपटीको पहचानना बड़ा कठिन है

बचन बेष क्यों जानिए मन मलीन नर नारि ।  
सूपनखा मृग पूतना दसमुख प्रमुख बिचारि ॥

कपटी से सदा डरना चाहिये

हँसनि मिलनि बोलनि मधुर कटु करतब मन माँह ।  
छुवत जो सकुचइ सुमति सो तुलसी तिन्ह कि छाँह ॥

कपट ही दुष्टताका स्वरूप है

कपट सार सूची सहस बाँधि बचन परबास ।  
कियो दुराउ चहौ चातुरीं सो सठ तुलसीदास ॥

कपटी कभी सुख नहीं पाता

बचन बिचार अचार तन मन करतब छल छूति ।  
तुलसी क्यों सुख पाइऐे अंतरजामिहि धूति ॥  
सारदूल को स्वाँग करि कूकर की करतूति ।  
तुलसी तापर चाहिऐे कीरति बिजय बिभूति ॥

पाप ही दुःखका मूल है

बड़े पाप बाढ़े किए छोटे किए लजात ।  
तुलसी ता पर सुख चहत बिधि सों बहुत रिसात ॥

अविवेक ही दुःखका मूल है

देस काल करता करम बचन बिचार बिहीन ।

ते सुरतरु तर दारिदी सुरसरि तीर मलीन ॥  
साहस ही कै कोप बस किएँ कठिन परिपाक ।  
सठ संकट भाजन भए हठि कुजाति कपि काक ॥  
राज करत बिनु काजहीं करहिं कुचालि कुसाजि ।  
तुलसी ते दसकंध ज्यों जइहै सहित समाज ॥  
राज करत बिनु काजहीं ठटहिं जे कूर कुठाट ।  
तुलसी ते कुरुराज ज्यों जइहै बारह बाट ॥

विपरीत बुद्धि बिनाशका लक्षण है

सभा सुयोधन की सकुनि सुमति सराहन जोग ।  
द्रोन बिदुर भीषम हरिहि कहहिं प्रपंची लोग ॥  
पांडु सुअन की सदसि ते नीको रिपु हित जानि ।  
हरि हर सम सब मानिअत मोह ग्यान की बानि ॥  
हित पर बढ़इ बिरोध जब अनहित पर अनुराग ।  
राम बिमुख बिधि बाम गति सगुन अघाइ अभाग ॥  
सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।  
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥

जोशमें आकर अनधिकार कार्य करनेवाला पछताता है

भरुहाए नट भाँट के चपरि चढ़े संग्राम ।  
कै वै भाजे आइहै के बाँधे परिनाम ॥

समयपर कष्ट सह लेना हितकर होता है

लोक रीति फूटी सहहिं आँजी सहइ न कोइ ।  
तुलसी जो आँजी सहइ सो आँधरो न होइ ॥

भगवान् सबके रक्षक है

भागें भल ओड़ेहुँ भलो भलो न घालें घाउ ।  
तुलसी सब के सीस पर रखवारो रघुराउ ॥

लड़ना सर्वथा त्याज्य है

सुमति बिचारहिं परिहरहिं दल सुमनहुँ संग्राम ।  
सकुल गए तनु बिनु भए साखी जादौ काम ॥  
ऊलह न जानब छोटे करि कलह कठिन परिनाम ।  
लगति अग्नि लघु नीच गृह जरत धनिक धन धाम ॥

क्षमाका महत्व

छमा रोष के दोष गुन सुनि मनु मानहिं सीख ।  
अबिचल श्रीपति हरि भए भूसुर लहै न भीख ॥  
कौरव पांडव जानिए क्रोध छमा के सीम ।

पाँचहि मारि न सौ सके सयौ सँघारे भीम ॥

क्रोधकी अपेक्षा प्रेमके द्वारा वश करना ही जीत है

बोल न मोटे मारिऐ मोटी रोटी मारु ।  
जीति सहस सम हारिबो जीतें हारि निहारु ॥  
जो परि पायँ मनाइए तासों रूठि बिचारि ।  
तुलसी तहाँ न जीतिऐ जहँ जीतेहूँ हारि ॥  
जूझे ते भल बूझिबो भली जीति तें हार ।  
डहकें तें डहकाइबो भलो जो करिअ बिचार ॥  
जा रिपु सों हारेहूँ हँसी जिते पाप परितापु ।  
तासों रारि निवारिऐ समयँ सँभारिअ आपु ॥  
जो मधु मरै न मारिऐ माहुर देइ सो काउ ।  
जग जिति हारे परसुधर हारि जिते रघुराउ ॥  
बैर मूल हर हित बचन प्रेम मूल उपकार ।  
दो हा सुभ संदोह सो तुलसी किँ बिचार ॥  
रोष न रसना खोलिऐ बरु खोलिअ तरवारि ।  
सुनत मधुर परिनाम हित बोलिअ बचन बिचारि ॥  
मधुर बचन कटु बोलिबो बिनु श्रम भाग अभाग ।  
कुहू कुहू कलकंठ रव का का कररत काग ॥  
पेट न फूलत बिनु कहें कहत न लागइ ढेर ।  
सुमति बिचारें बोलिऐ समुझि कुफेर सुफेर ॥

वीतराग पुरुषोंकी शरण ही जगत् के जंजालसे बचनेका उपाय है

छिद्यो न तरुनि कटाच्छ सर करेउ न कठिन सनेहु ।  
तुलसी तिन की देह को जगत कवच करि लेहु ॥

शूरवीर करनी करते है, कहते नहीं

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।  
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

अभिमान के बचन कहना अच्छा नहीं

बचन कहे अभिमान के पारथ पेखत सेतु ।  
प्रभु तिय लूटत नीच भर जय न मीचु तेहिं हेतु ॥

दीनोंकी रक्षा करनेवाला सदा विजयी होता है

राम लखन बिजई भए बनहुँ गरीब निवाज ।  
मुखर बालि रावन गए घरहीं सहित समाज ॥

नीतिका पालन करनेवालेके सभी सहायक बन जाते हैं

खग मृग मीत पुनीत किय बनहुँ राम नयपाल ।

कुमति बालि दसकंठ घर सुहद बंधु कियो काल ॥

सराहनेयोग्य कौन है

लखइ अघानो भूख ज्यों लखइ जीतिमें हारि ।  
तुलसी सुमति सराहिऐ मग पग धरइ बिचारि ॥

अवसर चूक जानेसे बड़ी हानि होती है

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक ।  
सदा बिचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक ॥

समयका महत्व

सिंधु तरन कपि गिरि हरन काज साइँ हित दोउ ।  
तुलसी समयहिं सब बड़ो बूझत कहूँ कोउ कोउ ॥

तुलसी मीठी अमी तें मागी मिलै जो मीच ।  
सुधा सुधाकर समय बिनु काललकूट तें नीच ॥

विपत्तिकालके मित्र कौन है ?

तुलसी असमय के सखा धीरज धरम बिबेक ।  
साहित साहस सत्यव्रत राम भरोसो एक ॥  
समरथ कोउ न राम सों तीय हरन अपराधु ।  
समयहिं साधे काज सब समय सराहिं साधु ॥  
तुलसी तीरहु के चलें समय पाइबी थाह ।  
धाइज न जाइ थहाइबी सर सरिता अवगाह ॥

होनहारकी प्रबलता

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ ।  
आपुनु आवइ ताहि पै ताहि तहाँ लै जाइ ॥

परमार्थप्राप्तिके चार उपाय

कै जूझीबो कै बूझिबो दान कि काय कलेस ।  
चारि चारु परलोक पथ जथा जोग उपदेस ॥

विवेककी आवश्यकता

पात पात को सीचिबो न करु सरग तरु हेत ।  
कुटिल कटुक फर फरैगो तुलसी करत अचेत ॥

विश्वासकी महिमा

गठिबंध ते परतीति बड़ि जेहिं सबको सब काज ।  
कहब थोर समुझब बहुत गाड़े बढत अनाज ॥  
अपनो ऐपन निज हथा तिय पूजहिं निज भीति ।  
फरइ सकल मन कामना तुलसी प्रीति प्रतीति ॥  
बरषत करषत आपु जल हरषत अरघनि भानु ।  
तुलसी चाहत साधु सुर सब सनेह सनमानु ॥

बारह नक्षत्र व्यापारके लिये अच्छे हैं

श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हर रेवती सखाउ ।  
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुँ न जाइहि काउ ॥

चौदह नक्षत्रोंमें हाथसे गया हुआ धन वापस नहीं मिलता

ऊगुन पूगुन बि अज कृ म आ भ अ मू गुनु साथ ।  
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़इ न हाथ ॥

कौन-सी तिथियाँ कब हानिकारक होती हैं ?

रबि हर दिसि गुन रस नयन मुनि प्रथमादिक बार ।  
तिथि सब काज नसावनी होइ कुजोग विचार ॥

कौन-सा चन्द्रमा घातक समझना चाहिये ?

ससि सर नव दुइ छ दस गुन मुनि फल बसु हर भानु ।  
मेषादिक क्रम तें गनहिं घात चंद्र जियँ जानु ॥

किन-किन वस्तुओंका दर्शन शुभ है ?

नकुल सुदरसनु दरसनी छेमकरी चक चाष ।  
दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहिं मन अभिलाष ॥

सात वस्तुएँ सदा मङ्गलकारी हैं

सुधा साधु सुरतरु सुमन सुफल सुहावनि बात ।  
तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमंगल सात ॥

श्रीरघुनाथजीका स्मरण सारे मङ्गलोंकी जड़ है

भरत सत्रुसूदन लखन सहित सुमिरि रघुनाथ ।  
करहु काज सुभ साज सब मिलिहि सुमंगल साथ ॥

यात्राके समयका शुभ स्मरण

राम लखन कौसिक सहित सुमिरहु करहु पयान ।

लच्छि लाभ लै जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥

वेदकी अपार महिमा

अतुलित महिमा वेद की तुलसी किँ विचार ।  
जो निंदत निंदित भयो बिदित बुद्ध अवतार ॥  
बुध किसान सर वेद निज मतेँ खेत सब सींच ।  
तुलसी कृषि लखि जानिबो उत्तम मध्यम नीच ॥

धर्मका परित्याग किसी भी हालतमें नहीं करना चाहिये

सहि कुबोल साँसति सकल अँगइ अनट अपमान ।  
तुलसी धरम न परिहरिअ कहि करि गए सुजान ॥

दूसरेका हित ही करना चाहिये, अहित नहीं

अनहित भय परहित किँ पर अनहित हित हानि ।  
तुलसी चारु बिचारु भल करिअ काज सुनि जानि ॥

प्रत्येक कार्यकी सिद्धिमें तीन सहायक होते हैं

पुरुषारथ पूरब करम परमेस्वर परधान ।  
तुलसी पैरत सरित ज्यों सबहिं काज अनुमान ॥

नीतिका अवलम्बन और श्रीरामजीके चरणोंमें प्रेम ही श्रेष्ठ है

चलब नीति मग राम पग नेह निबाहब नीक ।  
तुलसी पहिरिअ सो बसन जो न पखारें फीक ॥  
दोहा चारु बिचारु चलु परिहरि बाद विवाद ।  
सुकृत सीवँ स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥

विवेकपूर्वक व्यवहार ही उत्तम है

तुलसी सो समरथ सुमति सुकृती साधु सयान ।  
जो बिचारि व्यवहरइ जग खरच लाभ अनुमान ॥  
जाय जोग जग छेम विनु तुलसी के हित राखि ।  
विनुऽपराध भृगुपति नहुष बेनु बृकासुर साखि ॥

नेमसे प्रेम बड़ा है

बड़ि प्रतीति गठिबंध तें बड़ो जोग तें छेम ।  
बड़ो सुसेवक साइँ तें बड़ो नेम तें प्रेम ॥

किस-किसका परित्याग कर देना चाहिये

सिष्य सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन साँच ।

सुनि समुझिअ पुनि परिहरिअ पर मन रंजन पाँच ॥

सात वस्तुओंको रस बिगड़नेके पहले ही छोड़ देना चाहिये

नगर नारि भोजन सचिव सेवक सखा अगार ।  
सरस परिहरें रंग रस निरस बिषाद बिकार ॥

मनके चार कण्टक हैं

तूठहिं निज रुचि काज करि रूठहिं काज बिगारि ।  
तीय तनय सेवक सखा मन के कंटक चारि ॥

कौन निरादर पाते हैं ?

दीरघ रोगी दारिदी कटुबच लोलुप लोग ।  
तुलसी प्रान समान तउ होहिं निरादर जोग ॥

पाँच दुःखदायी होते है

पाही खेती लगन बट रिन कुव्याज मग खेत ।  
वैर बड़े सों आपने किए पाँच दुख हेत ॥

समर्थ पापीके वैर करना उचित नहीं

धाइ लगै लोहा ललकि खैंचि लेइ नइ नीचु ।  
समरथ पापी सों बयर जानि बिसाही मीचु ॥

शोचनीय कौन है

सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।  
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ॥

परमार्थसे विमुख ही अंधा है

तुलसी स्वारथ सामुहो परमारथ तन पीठि ।  
अंध कहें दुख पाइहै डिठिआरो केहि डीठि ॥

मनुष्य आँख होते हुए भी मृत्युको नहीं देखते

बिन आँखिन की पानहीं पहिचानत लखि पाय ।  
चारि नयन के नारि नर सूझत मीचु न माय ॥

मूढ़ उपदेश नहीं सुनते

जौ पै मूढ़ उपदेस के होते जोग जहान ।  
क्यों न सुजोधन बोध कै आए स्याम सुजान ॥

सोरठा

फुलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।  
मूरुख हृदयँ न चेत जौ गुर मिलहिं बिरंचि सम ॥

दोहा

रीझि आपनी बूझि पर खीझि बिचार बिहीन ।  
ते उपदेस न मानहीं मोह महोदधि मीन ॥

बार-बार सोचनेकी आवश्यकता

अनसमुझें अनुसोचनो अवसि समुझिए आपु ।  
तुलसी आपु न समुझिए पल पल पर परितापु ॥

मूर्खशिरोमणि कौन हैं ?

कूप खनत मंदिर जरत आएँ धारि बबूर ।  
बवहिं नवहिं निज काज सिर कुमति सिरमनि कूर ॥

ईश्वरविमुखकी दुर्गति ही होती है

निडर ईस तें बीस कै बीस बाहु सो होइ ।  
गयो गयो कहैं सुमति सब भयो कुमति कह कोइ ॥

जान-बूझकर अनीति करनेवालेको उपदेश देना व्यर्थ हैं

जो सुनि समुझि अनीति रत जागत रहे जु सोइ ।  
उपदेसिबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ ॥  
बहु सुत बहु रुचि बहु वचन बहु अचार व्यवहार ।  
इनको भलो मनाइबो यह अग्यान अपार ॥

जगत् के लोगोंको रिझानेवाला मूर्ख हैं

लोगनि भलो मनाव जो भलो होन की आस ।  
करत गगन को गेंडुँआ सो सठ तुलसीदास ॥  
अपजस जोग कि जानकी मनि चोरी की कान्ह ।  
तुलसी लोग रिझाइबो करषि कातिबो नान्ह ॥  
तुलसी जु पै गुमान को होतो कछु उपाउ ।  
तौ कि जानकिहि जानि जियँ परिहरते रघुराउ ॥

प्रतिष्ठा दुःखका मूल है

मागि मधुकरी खात ते सोवत गोड़ पसारि ।  
पाप प्रतिष्ठा बढि परी ताते बाढ़ी रारि ॥

तुलसी भेड़ी की धँसनि जड़ जनता सनमान ।  
उपजत ही अभिमान भो खोवत मूढ़ अपान ॥

### भेड़ियाधँसानका उदाहरण

लही आँखि कब आँधरे बाँझ पूत कब ल्याइ ।  
कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच जाइ ॥

ऐश्वर्य पाकर मनुष्य अपनेको निडर मान बैठते हैं

तुलसी निरभय होत नर सुनिअत सुरपुर जाइ ।  
सो गति लखि व्रत अछत तनु सुख संपति गति पाइ ॥  
तुलसी तोरत तीर तरु बक हित हंस बिडारि ।  
बिगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरिहू बढिआरि ॥  
अधिकरी बस औसरा भलेउ जानिबे मंद ।  
सुधा सदन बसु बारहें चउथें चउथिउ चंद ॥

नौकर स्वामीकी अपेक्षा अधिक अत्याचारी होते है

त्रिबिध एक बिधि प्रभु अनुग अवसर करहिं कुटाट ।  
सूधे टेढ़े सम विषम सब महँ वारहवाट ॥  
प्रभु तें प्रभु गन दुखद लखि प्रजहिं सँभारै राउ ।  
कर तें होत कृपानको कठिन घोर घन घाउ ॥  
ब्यालहु तें बिकराल बड़ ब्यालफेन जियँ जानु ।  
वहि के खाए मरत है वहि खाए बिनु प्रानु ॥  
कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।  
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥  
काल बिलोकत ईस रुख भानु काल अनुहारि ॥  
रबिहि राउ राजहिं प्रजा बुध ब्यवहरहिं बिचारि ॥  
जथा अमल पावन पवन पाइ कुसंग सुसंग ।  
कहिअ कुबास सुबास तिमि काल महीस प्रसंग ॥  
भलेहु चलत पथ पोच भय नृप नियोग नय नेम ।  
सुतिय सुभूपति भूषिअत लोह सँवारित हेम ॥

राजाको कैसा होना चाहिये ?

माली भानु किसान सम नीति निपुन नरपाल ।  
प्रजा भाग बस होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल ॥  
बरषत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ ।  
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होइ ॥

### राजनीति

सुधा सुजान कुजान फल आम असन सम जानि ।  
सुप्रभु प्रजा हित लेहिं कर सामादिक अनुमानि ॥  
पाके पकए बिटप दल उत्तम मध्यम नीच ।

फल नर लहैं नरेस त्यों करि बिचारि मन बीच ॥  
रीझि खीझि गुरु देत सिख सखा सुसाहिब साधु ।  
तोरि खाइ फल होइ भल तरु काटें अपराधु ॥

धरनि धेनु चारितु चरत प्रजा सुबच्छ पेन्हाइ ।  
हाथ कछु नहिं लागिहै किऐँ गोड़ कि गाइ ॥  
चढ़े बधूरें चंग ज्यों ग्यान ज्यों सोक समाज ।  
करम धरम सुख संपदा त्यों जानिबे कुराज ॥  
कंटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि ।  
मरहिं कृनृप करि करि कुनय सों कुचालि भव भूरि ॥  
काल तोपची तुपक महि दारू अनय कराल ।  
पाप पलीता कठिन गुरु गोला पुहुमी पाल ॥

किसका राज्य अचल हो जाता है ?

भूमि रुचिर रावन सभा अंगद पद महिपाल ।  
धरम राम नय सीय बल अचल होत सुभ काल ॥  
प्रीति राम पद नीति रति धरम प्रतीति सुभायँ ।  
प्रभुहि न प्रभुता परिहरै कबहुँ बचन मन कायँ ॥  
कर के कर मन के मनहिं बचन बचन गुन जानि ।  
भूपहि भूलि न परिहरै बिजय बिभूति सयानि ॥  
गोली बान सुमंत्र सर समुझि उलटि मन देखु ।  
उत्तम मध्यम नीच प्रभु बचन बिचारि बिसेषु ॥  
सत्रु सयानो सलिल ज्यों राख सीस रिपु नाव ।  
बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहुँ दिसि घाव ॥  
रैअत राज समाज घर तन धन धरम सुबाहु ।  
सांत सुसचिवन सौँपि सुख बिलसइ नित नरनाहु ॥  
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक ।  
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥  
सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।  
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोइ ॥  
सचिव बैद गुर तीनि जौँ प्रिय बोलहिं भय आस ।  
राज धर्म तन तीनी कर होइ बेगिहीं नास ॥  
रसना मन्त्री दसन जन तोष पोष निज काज ।  
प्रभु कर सेन पदादिका बालक राज समाज ॥  
लकड़ी डौआ करछुली सरस काज अनुहारि ।  
सुप्रभु संग्रहहिं परिहरहिं सेवक सखा बिचारि ॥  
प्रभु समीप छोटे बड़े रहत निबल बलवान ।  
तुलसी प्रगट बिलोकिए कर अँगुली अनुमान ॥

आज्ञाकारी सेवक स्वामी से बड़ा होता है

साहब तें सेवक बड़ो जो निज धरम सुजान ।  
राम बाँधि उतरे उदधि लाँधि गए हनुमान ॥

मूलके अनुसार बढ़नेवाला और बिना अभिमान किये

सबको सुख देनेवाला पुरुष ही श्रेष्ठ है

तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहिं अनुकुल ।  
सबहि भाँति सब कहँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ॥

त्रिभुवनके दीप कौन है ?

सधन सगुन सधरम सगन सबल सुसाइँ महीप ।  
तुलसी जे अभिमान बिनु ते त्रिभुवन के दीप ॥

कीर्ति करतूतिसे ही होती है

तुलसी निज करतूति बिनु मुकुत जात जब कोइ ।  
गयो अजामिल लोक हरि नाम सक्यो नहिं धोइ ॥

बड़ो का आश्रय भी मनुष्यको बड़ा बना देता है

बड़ो गहे ते होत बड़ ज्यो बावन कर दंड ।  
श्रीप्रभु के संग सों बड़ो गयो अखिल ब्रह्मंड ॥

कपटी दानीकी दुर्गति

तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ उठाइ ।  
प्रतिग्राही जीवै नहीं दाता नरकै जाइ ॥

अपने लोगोंके छोड़ देनेपर सभी वैरी हो जाते है

आपन छोड़ो साथ जब ता दिन हितू न कोइ ।  
तुलसी अंबुज अंबु बिनु तरनि तासु रिपु होइ ॥

साधनसे मनुष्य ऊपर उठता है और साधन बिना गिर जाता है

उरबी परि कलहीन होइ ऊपर कलाप्रधान ।  
तुलसी देखु कलाप गति साधन घन पहिचान ॥

सज्जनोको दुष्टोंका संग भी मङ्गलदायक होता है

तुलसी संगति पोच की सुजनहि होति म-दानि ।  
ज्यो हरि रूप सुताहि तें कीनि गोहारि आनि ॥

कलियुगमें कुटिलताकी वृद्धि

कलि कुचालि सुभ मति हरनि सरलै दंडै चक्र ।  
तुलसी यह निहचय भई बाढ़ि लेति नव बक्र ॥

आपसमें मेल रखना उत्तम है

गो खग खे खग बारि खग तीनों माहिं बिसेक ।  
तुलसी पीवै फिरि चलै रहैं फिरै संग एक ॥

सब समय समतामे स्थित रहनेवाले पुरुष ही श्रेष्ठ हैं

साधन समय सुसिद्धि लहि उभय मूल अनुकूल ।  
तुलसी तीनिउ समय सम ते महि मंगल मूल ॥

जीवन किनका सफल है ?

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।  
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥

पिताकी आज्ञाका पालन सुखका मूल है

अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।  
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥

स्त्रीके लिये पतिसेवा ही कल्याणदायिनी है

सोरठा

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।  
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

शरणागतका त्याग पापका मूल है

दोहा

सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।  
ते नर पावँ पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि ॥  
तुलसी तून जलकूल को निरबल निपट निकाज ।  
कै राखे कै संग चलै बाँह गहे की लाज ॥

कलियुगका वर्णन

रामायन अनुहरत सिख जग भयो भारत रीति ।  
तुलसी सठ की को सुनै कलि कुचालि पर प्रीति ॥

पात पात कै सीचिबो बरी बरी कै लोन ।  
तुलसी खोटें चतुरपन कलि डहके कहु को न ॥  
प्रीति सगाई सकल विधि बनिज उपायँ अनेक ।  
कल बल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक ॥  
दंभ सहित कलि धरम सब छल समेत व्यवहार ।  
स्वारथ सहित सनेह सब रूचि अनुहरत अचार ॥  
चोर चतुर बटमार नट प्रभु प्रिय भँडुआ भंड ।  
सब भच्छक परमारथी कलि सुपंथ पाषंड ॥  
असुभ बेष भूषण धरें भच्छाभच्छ जे खाहीं ।  
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥

सोरठा

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।  
मन क्रम बचन लवार ते बकता कलिकाल महुँ ॥

दोहा

ब्रह्मग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।  
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं विप्र गुर घात ॥  
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।  
जानइ ब्रह्म सो विप्रवर आँखि देखावहिं डाटि ॥  
साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान ।  
भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहिं बेद पुरान ॥  
श्रुति संमत हरिभगति पथ संजुत बिरति बिबेक ।  
तेहि परिहरिहिं बिमोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥  
सकल धरम बिपरीत कलि कल्पित कोटि कुपंथ ।  
पुन्य पराय पहार बन दुरे पुरान सुग्रन्थ ॥  
धातुवाद निरुपाधि बर सद्गुरु लाभ सुमीत ।  
देव दरस कलिकाल में पोथिन दुरे समीत ॥  
सुर सदननि तीरथ पुरिन निपट कुचालि कुसाज ।  
मनहुँ मवा से मारि कलि राजत सहित समाज ॥  
गौड़ गवार नृपाल महि जमन महा महिपाल ।  
साम न दान न भेद कलि केवल दंड कराल ॥  
फोरहिं सिल लोढा सदन लागें अढुक पहार ।  
कायर कूर कुपूत कलि घष घर सहस डहार ॥  
प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।  
जेन केन बिधि दीन्हे दान करइ कल्याण ॥  
कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।  
गाइ राम गुन गन विमल भव तर विनहिं प्रयास ॥

और चाहे जो भी घट जाय,  
भगवान् से प्रेम नहीं घटना चाहिये

श्रवन घटहुँ पुनि दूग घटहुँ घटउ सकल बल देह ।  
इते घटें घटिहै कहा जौ न घटै हरिनेह ॥

कुसमयका प्रभाव

तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन ।  
अब तो दादुर बोलिहैं हमें पूछिहै कौन ॥

श्रीरामजीके गुणोंकी महिमा

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।  
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईधन अनल प्रचंड ॥

कलियुगमें दो ही आधार है

सोरठा

कलि पाषंड प्रचार प्रबल पाप पावँर पतित ।  
तुलसी उभय अधार राम नाम सुरसरि सलिल ॥

भगवत्प्रेम ही सब मङ्गलोंकी खान है

दोहा

रामचंद्र मुख चंद्रमा चित चकोर जब होइ ।  
राम राज सब काज सुभ समय सुहावन सोइ ॥  
बीज राम गुन गन नयन जल अंकुर पुलकालि ।  
सुकृती सुतन सुखेत बर बिलसत तुलसी सालि ॥  
तुलसी सहित सनेह नित सुमिरहु सीता राम ।  
सगुन सुमंगल सुभ सदा आदि मध्य परिनाम ॥  
पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम ।  
सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम ॥

दोहावलीके दोहोंकी महिमा

मनिमय दोहा दीप जहँ उर घर प्रगट प्रकास ।  
तहँ न मोह तम भय तमी कलि कज्जली बिलास ॥  
का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँच ।  
काम जु आवै कामरी का लै करिअ कुमाच ॥

रामकी दीनबन्धुता

मनि मानिक महुँगे किए सहुँगे तून जल नाज ।  
तुलसी एते जानिए राम गरीब नेवाज ॥

॥ इति ॥

The texts by Goswami Tulasidas were encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam. The files were converted to ITRANS 5.21 encoding for creating this version.

Please contact the following for additional details:

Vineet Chaitanya  
vc@iiit.net  
<http://www.iiit.net>

Avinash Chopde  
avinash@acm.org  
<http://www.aczone.com/>

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated October 27, 2000